

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



एनडीए उम्मीदवार सुनीता चौधरी को भारी मतों
से विजयी बनाने के लिए मतदाताओं को दिल से

आजाद



सुनीता चौधरी
विधायक, रामगढ़



डॉ. लम्बोदर महतो

आजसू विधायक
गोमिया विधानसभा क्षेत्र

अच्छे लोग

अच्छी सोच

अच्छे परिणाम



तीन साल 70 दिन बाद एनडीए को मिली संजीवनी

- रामगढ़ की जीत लंबी सांसवाली राहत है एनडीए गठबंधन के लिए
- भाजपा आजसू अगर एक साथ है, तो जोड़ी हिट है, वरना 2019 तो याद ही होगा
- झारखंड की राजनीति में अहम मोड़ साबित होगा यह चुनाव परिणाम
- सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के लिए आत्ममंथन करने का समय

रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव में भाजपा-आजसू गठबंधन ने बड़ी जीत हासिल कर ली है। इस जीत ने दोनों को यह जता भी दिया है कि एक और एक ज्यादा होते हैं। मतलब दोनों अगर साथ रहे, तो कामयाबी मिलेगी। यह चुनाव परिणाम कांग्रेस के लिए अप्रत्याशित है, व्याकोंकि इसमें कांग्रेस के कब्जे से रामगढ़ निकल गया है। कांग्रेस झारखंड की सत्ता में झामुमो के साथ बराबर की साझीदार है और इस उपचुनाव में वाम दलों का समर्थन भी उसे मिला था। इसके बावजूद, रामगढ़ का चुनाव परिणाम अनुमानों के मुताबिक ही रहा। जहां तक इस चुनाव परिणाम के झारखंड की राजनीति पर असर की बात है, तो यह जीत भाजपा और आजसू के लिए कई मायमों में खास जरूर है। रामगढ़ की जीत एक तरह से यह साबित किया कि भाजपा-आजसू ने झामुमो-

कांग्रेस-राजद सरकार के खिलाफ चल रही सत्ता विरोधी लहर को खद्गबी भनाया और इसका फायदा भी उठाया। रामगढ़ में मिली जीत से इस बात की भी तस्दीक होती है कि भाजपा-आजसू ने प्रदेश में बेरोजगारी, विधि-व्यवस्था, महिला सुरक्षा, स्थानीयता विधेयक और सरकार की विश्वसनीयत में आयी कमी का लाभ उठाया है। लेकिन इसके साथ ही रामगढ़ की जनता ने संदेश दिया है कि अब एक चुनावी जीत ममता देवी और कांग्रेस पार्टी ने इलाके के लोगों को नजरअंदाज किया, वह कहीं से भी भूलनेवाली बात नहीं है। कांग्रेस को 2019

आजसू को भाजपा की मदद से रामगढ़ सीट पर जीत जरूर मिली है, लेकिन इस गठबंधन के लिए यह जीत आत्ममंथन का अवसर है। अब इन दोनों दलों को सोचना होगा कि जीत के इस सिलसिले को जारी करने रखा जा सकता है। दूसरी तरफ कांग्रेस के लिए रामगढ़ की जनता ने संदेश दिया है कि 2019 की जीत के बाद जिस तरह विधायक ममता देवी और कांग्रेस पार्टी ने इलाके के लोगों को नजरअंदाज किया, वह कहीं से भी भूलनेवाली बात नहीं है। कांग्रेस को 2019

में मिली जीत पर इतराने की बजाय धरातल पर काम करना चाहिए था। वैसे भी झारखंड कांग्रेस पूरी हेमंत सोरेन के भरोसे ही राजनीति कर रही है। यह रामगढ़ चुनाव में भी देखा गया। इस चुनाव में तन, मन और धन से कहीं भी कांग्रेस नजर नहीं आयी। उसके अधिकांश नेताओं ने तो सायोपर अधिवेशन का रुख कर लिया था। कांग्रेस को जो भी मत मिले, उसमें मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की बहुत बड़ी भूमिका है। अगर हेमंत सोरेन ने मोरचा नहीं संभाला होता, तो कांग्रेस की स्थिति और भी बुरी होती। जो भी हो, रामगढ़ का चुनाव परिणाम झारखंड की राजनीति का अहम मोड़ साबित होगा, व्याकोंकि इसमें छिपे संदेश के मायमों बहुत गहरे हैं। रामगढ़ चुनाव परिणाम का सियासी नजरिये से विश्लेषण कर रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संगाददाता राकेश सिंह।



राकेश सिंह

रामगढ़ उपचुनाव में सातारूढ़ महागठबंधन हार गया। वहां से झारखंड में महागठबंधन सरकार के बावजूद, लहर बन रही थी। मारंड में तो इसका फायदा भाजपा को इसलिए नहीं नहीं मिला, क्योंकि बंधु तिक्की चुनावी जंग के महिर खिलाड़ी हैं और वह चुनाव में हर चाल चलना जानते हैं, लेकिन रामगढ़ में कांग्रेस अपनी मुकम्मल रणनीति नहीं बनाया पाया। उसके कुछ नेता तो दूसरे राज्यों के चुनाव में व्यस्त हो गये और कुछ और कुछ नेताओं ने चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनायी थी। लेकिन रामगढ़ की जनता को सहानुभूति उनके साथ थी। सत्ता में होने का फायदा भी था। बावजूद इसके महागठबंधन की जीत का सिलसिला ढूटा।

दरअसल, मई 2022 से अब तक ऐसे कई कारण रहे, जिसकी वजह से झारखंड में महागठबंधन सरकार के बावजूद सत्ता विरोधी लहर बन रही थी। मारंड में तो इसका फायदा भाजपा को इसलिए नहीं नहीं मिला, क्योंकि बंधु तिक्की चुनावी जंग के महिर खिलाड़ी हैं और वह चुनाव में हर चाल चलना जानते हैं, लेकिन रामगढ़ में कांग्रेस अपनी मुकम्मल रणनीति नहीं बनाया पाया। यानी 2019 के चुनाव से एक तरह से यह साथ आया। अखिर क्या नहीं था जब ज्यादा चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनायी थी। लेकिन इस जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को समझ लेना चाहिए कि झारखंड में वे हिट रही हैं, जब वे जोड़ी में हैं अन्यथा पर्स्पर हैं। 2019 में हेमंत सोरेन सरकार के गठन के बाद से राज्य में वह पहला कारण रहा आजसू पार्टी और भाजपा का साथ आया। इससे पहले एनडीए को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

महागठबंधन सरकार की हार के पांच मुख्य कारण

दरअसल, रामगढ़ में महागठबंधन की हार का सबसे पहला कारण रहा आजसू पार्टी और भाजपा का साथ आया। इससे पहले एनडीए को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

चुनावी अंकड़ों से इतर रामगढ़ में सत्ता विरोधी लहर ने भी अपना असर दिखाया। 1932 के खतियान पर आधारित स्थानीय नेता वोट देने के बावजूद भाजपा-आजसू की जनता को जीत का बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

चुनावी अंकड़ों से इतर रामगढ़ में सत्ता विरोधी लहर ने भी अपना असर दिखाया। 1932 के खतियान पर आधारित स्थानीय नेता वोट देने के बावजूद भाजपा-आजसू की जनता को जीत का बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

चुनावी अंकड़ों से इतर रामगढ़ में सत्ता विरोधी लहर ने भी अपना असर दिखाया। 1932 के खतियान पर आधारित स्थानीय नेता वोट देने के बावजूद भाजपा-आजसू की जनता को जीत का बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।



था। रामगढ़ विधानसभा सीट का इतिहास भी एनडीए के साथ था। बता दें कि 2005 से 2014 के बीच लगातार तीन बार यहां से एनडीए प्रत्याशी के रूप में आजसू पार्टी के चंद्रप्रकाश चौधरी ने जीत हासिल की थी। 2019 में भाजपा और आजसू अलग-अलग लड़े। लेकिन चूंकि ममता देवी की जीत का बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनायी थी, इसकी जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

वर्ष 2019 में महागठबंधन प्रतिवर्ष पांच लाख रोजगार देने में बाधा आयी। कुछ भाषाओं में अनदेखी भी वेकेसी थी। यहां इस तरकार से सहानुभूति नहीं थी, अब भाषाओं में अनदेखी भी वेकेसी थी। यहां इसे बदलना नहीं था। रामगढ़ विधानसभा के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनाया गया। इसकी जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

वर्ष 2019 में महागठबंधन प्रतिवर्ष पांच लाख रोजगार देने में बाधा आयी। कुछ भाषाओं में अनदेखी भी वेकेसी थी। यहां इसे बदलना नहीं था। रामगढ़ विधानसभा के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनाया गया। इसकी जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

वर्ष 2019 में महागठबंधन प्रतिवर्ष पांच लाख रोजगार देने में बाधा आयी। कुछ भाषाओं में अनदेखी भी वेकेसी थी। यहां इसे बदलना नहीं था। रामगढ़ विधानसभा के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनाया गया। इसकी जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास चुनावी जंग के बावजूद भाजपा-आजसू को जीत मिला। इस बार दोनों ही पार्टीयां साथ थीं और इसका परिणाम दिखा।

वर्ष 2019 में महागठबंधन प्रतिवर्ष पांच लाख रोजगार देने में बाधा आयी। कुछ भाषाओं में अनदेखी भी वेकेसी थी। यहां इसे बदलना नहीं था। रामगढ़ विधानसभा के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में खास बनाया गया। इसकी जीत के बावजूद भाजपा-आजसू को अधिवेशन में संभाला ले दिया। उन्होंने कहा कि

संपादकीय

इकॉनामी की मुरिकले

मौ जुदा वित्तीय वर्ष 2022-23 की तीसरी तिमाही (अक्टूबर से दिसंबर) में जीडीपी ग्रोथ के अंकड़ों का कम होना नियंत्रणक न सही, विचारणीय तो है ही। इस तिमाही में ग्रोथ 4.4 फीसदी रही, जबकि दूसरी तिमाही यानी जुलाई से सितंबर की अवधि में जीडीपी में 6.3 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गयी थी और पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में 13.5 फीसदी रही। तीसरी तिमाही में इसमें कुछ कमी का अनुमान लगाया जा रहा था, लेकिन विशेषज्ञों में लगभग सर्वसम्मत थी कि गिर कर भी वह 4.7 फीसदी तक रहेगी। तीसरी तिमाही की अंकड़ों के मामले में इसमें जीडीपी की बढ़ोतरी के जॉ अनुमान बताये गये थे, उनका प्राप्त होना मुश्किल हो जायेगा। हालांकि सालाना 7 फीसदी बढ़ोतरी के इस अनुमान में अभी कोई संशोधन नहीं किया गया है। लेकिन अब इसे पूरा किया जाना है, तो वित्तीय वर्ष की चौथी यानी आखिरी तिमाही (जनवरी-मार्च 2023) के दौरान अर्थव्यवस्था को कम से कम 5.1 फीसदी की दर से बढ़ना होगा। यौजूदा हालात में यह लक्ष्य खासा चुनौतीपूर्ण लगता है। जीडीपी की रफतार में लगातार दो तिमाही की वह रफतार में लगातार की वह रफतार एसें समय आयी है, जब ग्रोवरल स्टोडाउन और मंदी की आशंकाओं के बीच भारत को एक ब्राइट स्पॉट यानी चमकदार बिंबु के रूप में रेखांकित किया जा रहा है। इस धीमी रफतार की बड़ी वजह

है नहीं का सीधा मतलब पहली नजर में यही है कि पूरे वित्तीय वर्ष के लिए जीडीपी बढ़ोतरी के जॉ अनुमान बताये गये थे, उनका पूरा होना मुश्किल हो जायेगा।

महंगाई का काबू करने के लिए व्याज दरों में लगातार की गयी बढ़ोतरी को माना जा रहा है। यौजूदा वैश्वक और राष्ट्रीय परिवहन में इस नीति के तत्काल प्रयत्नों के आसार भी नहीं दिख रहे, बर्योंक महंगाई का दबाव अभी भी बना हुआ है। दूसरी बात यह कि मैनैफैक्रिंग सेवरट का सिकुड़ना जारी है। इस तिमाही में इस सेवरट की बढ़ोतरी साल-दर-साल आगार पर 1.1 फीसदी दर्ज की गयी, जो केंज्यूम डिपॉड की कमशोरी दर्शाती है। एक अच्छी बात यह है कि कृषि क्षेत्र की ग्रोथ अच्छी बात हुई है। तीसरी तिमाही में 3.7 फीसदी दर्ज की गयी, जबकि पूरे वित्तीय वर्ष के लिए वह अनुमान 3.3 फीसदी की है। मगर यहां ध्यान रखना जरूरी है कि यह अनुमान इस धारणा पर आधारित है कि रबी की फसल जबरदस्त होगी, यानी तपामान बढ़ने जैसे किसी कारक का प्रतिकूल प्रभाव नहीं होगा। यह धारणा कितनी सही है, इसका पता तभी चलेगा जब फसल कटने का वक्त आयेगा। देखा जाये, तो महामारी के बाद से ही अर्थव्यवस्था को बढ़ाव देने में निवेश का काम मुख्यतया सरकार की ही ओर से हो रहा है, लेकिन जब तक वक्त आपको आपने देंगे तो इसमें बढ़ोतरी नहीं होती, तब तक ग्रोथ में मजबूती नहीं आयेगी। यह तभी होगा, जब कंस्ट्रूशन डिमांड में रिकवरी हो। सबसे बड़ी बात यह कि यौजूदा हालात में व्याज दरों में कमी की कोई उम्मीद भी कम से कम फिलहाल नहीं की जा सकती। इसी वजह से वित्तीय 2024 में ग्रोथ 2023 के मुकाबले कम रहने का अनुमान लगाया जा रहा है।

चाइबासा में रिश्वत लेते नाजिर रंगेहाथ गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता



इससे परेशान होकर विकास बोस ने इसकी शिकायत जमशेदपुर सोनारी स्थिती प्रैसीबी विभाग से की थी। गुरुवार को विकास बोस ने नाजिर को चार हजार रिश्वत दी। इसी दौरान एसीबी की टीम ने नाजिर को रोग होने पर लेते गिरफ्तार किया। इसके बाद एसीबी की टीम नाजिर को गिरफ्तार कर अपने साथ जमशेदपुर ले गयी।

एमजीएम थाना क्षेत्र में चार शराब भट्टियां की धस्त, 2 सौ लीटर अवैध शराब और 12 हजार किलो जावा महुआ बरामद

जमशेदपुर (आजाद सिपाही) पूर्वी सिंहभूम जिला आबकारी विभाग ने जिले के एमजीएम थाना क्षेत्र में कई स्थानों पर छापामारी कर वहां चल रही 4 अवैध महुआ शराब चुलाई भट्टियों को ध्वस्त करते हुए वहां से बड़ी मत्रा में तेवर अवैध महुआ शराब एवं हजारों किलो जावा महुआ बरामद किया है। होली का त्योहार नजदीकी होने के कारण अवैध शराब के आबकारी भी सक्रिय हो गये हैं। लोकों ने लेकर विभागीय अवैध महुआ शराब भट्टियों को ध्वस्त करने के लिए जिले के विभिन्न थानाओं में कानपुरे से गिरफ्तार कर जमशेदपुर लेकर आया। अपराधी कहौया सिंह पर शहर के धरमशाला के खिलाफ चारों ओर धमकी भी देने के जंगलों में छापामारी की आबकारी अधिकारियों ने उक्त स्थानों पर चल रही चार अवैध महुआ शराब भट्टियों को ध्वस्त कर दिया। जबकि वहां से बड़ी मत्रा में तेवर अवैध महुआ शराब व जावा महुआ भी बरामद किया। आबकारी अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार छापामारी के दौरान अधिकारियों ने 190 लीटर महुआ शराब के साथ ही 9 लीटर विदेशी शराब भी जब्त किया।

टाटा संस के संस्थापक की 184वीं जयंती पर जगमगा उठा शहर, शहरवासियों को मिला दो नये पार्क का तोहफा

आजाद सिपाही संवाददाता



जमशेदपुर। लौहनगरी जमशेदपुर में टाटा स्टील व टाटा संस के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा के जन्म जयंती होल्डलास के साथ मनाया गया। गुरुवार को टाटा स्टील व शहर वासियों को कई नये तोहफे को समर्पित किया। टाटा संस के संस्थापक जे एन टाटा की रेल लाइनों, पुरुलों, सुरांगों आदि के निर्माण पर 50,000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किये गये हैं। और लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए 9,970 करोड़ रुपये एवं वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 24 घंटे तक करने में सफल रहा है।

अवैध वर्ष 2022-23 के लिए टाटा संस के सन्दर्भ में, पूर्वोत्तर की स्थलाकृति हमेशा से एक कठिन चुनौती रही है। हालांकि, मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और अवैधिकारियों के सुरक्षा लोगों के बीच योग्य अवैध अच्छी बात यह है कि कृषि क्षेत्र की ग्रोथ अच्छी बात हुई है। तीसरी तिमाही में 3.7 फीसदी दर्ज की गयी, जबकि पूरे वित्तीय वर्ष के लिए वह अनुमान 3.3 फीसदी की है। मगर यहां ध्यान रखना जरूरी है कि यह अनुमान इस धारणा पर आधारित है कि रबी की फसल जबरदस्त होगी, यानी तपामान बढ़ने जैसे किसी कारक का प्रतिकूल प्रभाव नहीं होगा। यह धारणा कितनी सही है, इसका पता तभी चलेगा जब फसल कटने का वक्त आयेगा। देखा जाये, तो महामारी के बाद से ही अर्थव्यवस्था को बढ़ाव देने में निवेश का काम मुख्यतया सरकार की ही ओर से हो रहा है, लेकिन जब तक वक्त आपको आपने देंगे तो इसमें बढ़ोतरी नहीं होती, तब तक ग्रोथ में मजबूती नहीं आयेगी। यह तभी होगा, जब तक एसीबी को देखने के लिए वहां से रेलवे के बीच योग्य अवैध अच्छी बात हो जाए। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए 21 वर्षों से कोई विभिन्नता नहीं होती है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2027-28 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2028-29 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2029-30 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2030-31 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2031-32 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2032-33 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2033-34 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2034-35 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2035-36 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2036-37 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2037-38 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2038-39 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2039-40 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2040-41 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2041-42 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2042-43 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2043-44 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2044-45 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2045-46 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2046-47 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2047-48 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2048-49 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2049-50 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2050-51 के लिए 24 घंटे तक कठिन रहता है। इसके बाद लगानी गयी वित्तीय वर्ष 2051-52 के लिए 24 घंटे तक कठिन रह

